गिल्लू

इस पाठ में हम गिल्लू नामक गिलहरी के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। इस पाठ में गिल्लू के पूरे जीवन की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण बातों का संकेतों में उल्लेख किया गया है, जिनसे उसकी एक तस्वीर हमारे सामने उभर आती है। जब विस्तृत वर्णन को छोड़कर खास–खास बातों का उल्लेख करके लेखक किसी विषय में लिखते हैं, तो उसे साहित्य में रेखाचित्र कहा जाता है। जब रेखाचित्र में आत्मीय सम्बन्ध भी झलकने लगे तो वह संस्मरण विद्या के नजदीक पहुँचने लगता है। इसीलिए ऐसे रेखाचित्र को संस्मरण रेखाचित्र कहते हैं। गिल्लू भी एक संस्मरण रेखाचित्र ही है। सोनजूही के पौधे में एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज इस लघुप्राण की खोज है।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंच से छुआ–छऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है– इन्हें एक साथ मान, सम्मान, अपमान, अतिसम्मान सब मिल जाता है । मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी क्योंकि गमले और दोवार की संधि में छिप एक छोटे से जीव पर मेरी नजर रुक गई। पास जाकर देखा, गिलहरी का छोटा बच्चा जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे उसमें अपना सुलभ आहार खोज रहे है। जब मेरा मन नहीं माना तो मैंने हौले से उसके घावों पर पेनिसिलीन का मरहम लगाया। रूई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे–तैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदे दोनों ओर ढुलक गई। कुछ दिन बाद वह स्वस्थ हो गया । तीन-चार माह बाद स्निग्ध राएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखे सबको विस्मित करने लगी। मैंने उसका नाम गिल्लू रख दिया | मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। वहीं दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच क मनकों सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता रहता था परन्तु उसकी समझदारो और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था। जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला। वह मेरे पैर के पास आता व सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। भूख लगने पर वह चिक–चिक करके मानो बता रहा है कि उसे बिस्कुट तथा काजू चाहिए। फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम–चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले–होले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ जाली के पास आकर चिक–चिक करके न जाने क्या कहने लगी। गिल्लू के लिए जाली का एक हिस्सा खोल दिया। वह भी वहाँ अन्दर बाहर हो जाया करता था। जब में कॉलेज से आती तो वह मेरे आस–पास मँडराने लगता और उछलकूद करने लगता। उसे मुझे चौंकाने की आदत सी पड़ गई थी। वह कभी फूलदान तो कभी परदे के पीछे छिप जाया करता था।

मेरे साथ और भी जानवर रहते **थें**। कभी किसी ने मेरी थाली में खाना नहीं खाया परन्तु गिल्लू इसमें अपवाद था। मै जैसे ही खाना खाने के लिए कमरे में पहुँचती, वह भी **मेरे** पीछे–पीछे खाने की मेज पर पहुँच जाता और थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से **मैंने** उसे थाली के पास बैठना सिखाया। काजू उसका प्रिय भोजन था। कई दिनों तक उसे काजू नही मिलता तो वह और कोई चीज **नहीं** खाता। उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर तेजी से अपने घोंसले मे चला जाता। सब उसे काजू दे जाते परन्तु वह उसे खाता नहीं था। मैं अस्पताल से लौटकर आई और जब सफाई की तो सारे काजू उसके घोंसले में भरे पड़े थे। जिससे ज्ञात होता है कि वह मुझसे कितना प्रेम रखता है और वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें–नन्हें पंजो से मेरे सिर और बालों को इतने हौले–हौले सहलाता रहता कि उसका जाना एक नर्स के जाने के समान लगता था। गर्मियों से बचने के लिए वह सुराही पर लेट जाता। गिलहरियों की जीवन अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न की स्थिति में पकड़ा था और वह सुबह हाते ही जीवन भर के लिए सो गया। उसका झूला उतार कर रख दिया गया और खिड़की की जाली बंद कर दी गई। सोनजूही की लता के **नीचे** गिल्लू को समाधि दी गई है **क्योंकि** उसे **वह** लता सबसे अधिक प्रिय थी। मुझे विश्वास है **कि** सोनजूही का पीला फूल जब खिलेगा उसमें मेरा गिल्लू भी आयेगा।

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा

जन्मः–

कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म फरूखाबाद उत्तरप्रदेश में सन् 1907 में हुआ था।

मृत्युः–

महादेवी वर्मा की मृत्यु 11 सितम्बर सन् 1987 को इलाहाबाद में हुई थी।

रचनाएँः–

महादेवी वर्मा ने मुख्यतः संस्मरण एवं रेखाचित्र लिखें ह–

1. अतीत के चलचित्र
2. स्मृति की रेखाएँ
3. पथ के साथी
4. **क्षणदा**
5. स्मृति चित्र
6. मेरा परिवार
7. **श्रृंखला** की कड़ियाँ

साहित्य में स्थानः–

हिन्दी गद्य में संस्मरण और रेखाचित्रों का सूत्रपात करने का श्रेय महादेवी वर्मा को है। भारत सरकार ने उन्हें 'पदमभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। उनकी कृति यामा के लिए उन्हें 1984 को ज्ञानपीठ **पुरस्कार** प्रदान किया गया।